



गीतांजलि



गीता बजाज महिला शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर की कॉलेज पत्रिका

संस्करण-001/23

प्रकाशन-1 दिसम्बर 2023

गीता बजाज बी एड कॉलेज के अध्यक्ष होने के नाते मुझे अपार खुशी है कि हम आपके साथ हमारे न्यूजलैटर के नये माध्यम से जुड़ रहे हैं, जो आपको हमारे महाविद्यालय की घटनाओं, आयोजनों और दैनिक गतिविधियों से अवगत कराएगा।

हमारे महाविद्यालय में शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति हो रही है और हम सभी इसमें अपना योगदान दे रहे हैं। हम अपने विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें उनके विकास के लिए भी शिक्षित कर रहे हैं। हमारे विद्यार्थी अच्छे अकादमिक प्रदर्शन के साथ-साथ खेल-कूद और कला से भी जुड़े हुए हैं।

हमारे महाविद्यालय में बहुत सारे आयोजन होते हैं जिनमें हमारे विद्यार्थी बहुत उत्साह से भाग लेते हैं। इस न्यूजलैटर के माध्यम से हम आपको इन सभी आयोजनों की जानकारी देंगे।

हमारे महाविद्यालय में विद्यार्थियों के साथ-साथ अध्यापक भी अपने अनुभव और ज्ञान को साझा करते रहते हैं। हम आपको अध्यापकों और उनके कार्यों के बारे में भी बताएंगे जो अध्ययन के अलावा अपने शोध कार्यों में भी सक्रिय हैं।

मैं आशा करता हूँ कि आपको यह न्यूजलैटर पसंद आएगा। हम आपके सुझाव और अनुरोधों का स्वागत करते हैं।

धन्यवाद !

रवि गुप्ता

अध्यक्ष

न्यूजलैटर हमारे कॉलेज के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है जिसके माध्यम से हम अपनी जानकारी और अनुभवों को साझा कर सकते हैं।

हमारे कॉलेज का यह न्यूजलैटर विभिन्न विषयों पर आधारित है। इसमें कॉलेज में हुए समाज के मुद्दों, विज्ञान, तकनीक, संस्कृति, शिक्षा, खेल-कूद और बहुत सी गतिविधियों के बारे में छापा है। इसमें लेख और कविताएं भी हैं।

मैं उम्मीद करता हूँ कि हम इस न्यूजलैटर के माध्यम से हमारे कॉलेज के सभी छात्राओं की शिक्षा और अन्य महत्वपूर्ण योगदान के बारे में बताते रहेंगे।

इसलिए, मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि आप हमारे न्यूजलैटर को ध्यान से पढ़ें, और इसके माध्यम से अपना ज्ञानवर्धन करें।

हम चाहते हैं कि हमारे छात्र इस न्यूजलैटर को अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानें। इससे वे न केवल अपनी ज्ञान और संवेदनशीलता को बढ़ा सकेंगे बल्कि अपने बारे में और अपने जीवन के लक्ष्य के बारे में सोचने की क्षमता भी विकसित करेंगे।

धन्यवाद !

गुरदेव सिंह

संस्थान मंत्री

गीता बजाज बी एड कॉलेज, जयपुर के न्यूज लैटर के पहले अंक को पेश करते हुए मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है। मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि महाविद्यालय का समस्त स्टाफ विपरीत परिस्थितियों में भी अपने कार्य में उत्साहपूर्वक, पूर्ण निष्ठा से सक्रिय रहते हैं। सभी व्याख्याताओं में अपने कार्य के प्रति समर्पण की ये भावना ही संस्थान की प्रगति व प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक है।

हमारे बी एड कॉलेज में लगभग 240 छात्र और 13 शिक्षक हैं। कॉलेज की छात्राओं और व्याख्याताओं की टीम ने इस न्यूजलैटर को निकालने में सहयोग व प्रतिबद्धता दिखाई है। इस न्यूज लैटर में हमने इस वर्ष कॉलेज में किए गए विभिन्न कार्यक्रमों, जैसे सेमिनार, वाद-विवाद और क्विज आदि गतिविधियों का संकलन किया है। और कुछ लेखों के माध्यम से शिक्षकों ने अपने कौशल और ज्ञान का प्रदर्शन किया है।

मैं छात्राओं और शिक्षकों से आग्रह करूँगी कि वे कॉलेज के कार्यक्रमों में भाग लेना जारी रखें और कॉलेज द्वारा प्रदान किये जाने वाले अवसरों का लाभ उठाकर अपने अकादमिक और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा दें। मैं विभाग के शिक्षकों को विशेष धन्यवाद देना चाहूँगी जिन्होंने छात्रों के अकादमिक और पेशेवर यात्रा को आकार देने में लगातार सहयोग और मार्गदर्शन किया है। मुझे यकीन है कि कॉलेज भविष्य में भी इसी तरह उत्साहपूर्वक काम करता रहेगा और इस तरह के अंक निकलते रहेंगे।

सभी को शुभकामनाएं !

डॉ. दीप्ति त्रिपाठी

प्राचार्या

प्रकाशक : गीता बजाज महिला शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय, मोती झूंगरी सर्किल, गोविन्द मार्ग, जयपुर (राज.)

फोन- 0141-2624143, 0141-2623730

ई-मेल : geetabajajsansthan.jaipur@gmail.com

संस्थान परिचय

07 जुलाई 1952, गुरु पूर्णिमा के पुनीत-पावन दिन प्रारम्भ हुये इस विद्यालय की स्थापना स्व. गीता बजाज ने की थी, जो जयपुर एवं राजस्थान के जन-मानस में एक निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी, समर्पित समाज सेविका, सच्ची गांधीवादी एवं शैक्षिक दूरदृष्टा के रूप में जानी जाती थीं। ज्ञातव्य है कि उन्हें वर्धा आश्रम में पूज्य 'बापू' के सानिध्य में रहने का सौभाग्य भी मिला था।

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर एवं राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त यह उच्च माध्यमिक हिन्दी माध्यम सहशैक्षिक विद्यालय प्राचीन भारतीय जीवन मूल्यों तथा आधुनिकतम ज्ञान-विज्ञान का अद्भुत एवं अपूर्व समन्वय है।

इस संस्था में बी.एड कॉलेज की स्थापना सन् 1976 में हुई थी। यह राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा स्थायी मान्यता प्राप्त बी.एड महाविद्यालय है।

संस्थान का उद्देश्य छात्रों को केवल पुस्तकीय ज्ञान में ही निष्णात करना नहीं, अपितु उन्हें भावी जीवन के लिए भी तैयार करना है। छात्र का शैक्षिक, शारीरिक, संवेगात्मक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास करने के साथ ही उसे एक जिम्मेदार वैश्विक नागरिक बनाना भी है। उनमें सादगी, स्वदेशी, श्रम, स्वावलम्बन, सहिष्णुता एवं सहयोग जैसे गांधीवादी मूल्यों को विकसित करना संस्थान की प्राथमिकता है।

“वसुधैव कुटुम्बकम्” हमारे लिए एक आदर्श उक्तिमात्र नहीं, हमारे आचरण का अंग है, हमारे शैक्षिक दर्शन का अंश है। जयपुर नगर के बीचों-बीच स्थित संस्थान परिसर 13,625 वर्ग मीटर में फैला हुआ है। हरे-भरे वृक्षों, घास के मैदानों तथा महकते पुष्पों एवं लताओं के बीच स्थित संस्थान का भव्य भवन बरबस ही अपनी ओर आकृष्ट करता है।



पुनश्चर्या कार्यक्रम (27 जून से 30 जून 2023)

Refresher Course



प्रो. सौमित्र नाथ झा द्वारा सत्र उद्घाटन



भाषा कौशलों का ज्ञान प्रदान करते हुए श्रीमती नीना शर्मा



OHP की सहायता से कक्षा कक्ष प्रबंधन कौशल का प्रदर्शन करते हुए श्रीमती कुसुमलता टाक

स्थापना दिवस समारोह (07 जुलाई 2023)



स्थापना दिवस पर मुख्य अतिथि
डॉ. कमला वशिष्ठ जी का सम्बोधन



संस्थान स्थापना दिवस पर
आ. कृष्णा दीदी द्वारा वृक्षारोपण

व्याख्यान माला (14 अगस्त 2023)



जाने माने वक्ता एवं पत्रकारिता प्रोफेसर अविनाश सिंह

77वां स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त 2023)



देश व संस्था की प्रगति की कामना करता संस्था प्रशासन



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर महाविद्यालय छात्राओं द्वारा परेड



विद्यालय के मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करती आदरणीय कृष्णा दीदी

BHARAT OR INDIA ?

The argument continues! India, the seventh-largest country in the world, is known for its diverse culture, rich history, and vibrant democracy. However, a debate has persisted throughout the years regarding the official name of the country. Some argue that it should be called Bharat, while others prefer the name India. This ongoing argument reflects the complex identity and history of this vast nation. The term "Bharat" holds great significance in Indian mythology and history. It traces its roots back to ancient times when the legendary emperor Bharata ruled over a prosperous kingdom. Many believe that this is where the name "Bharat" originated, symbolizing the glorious past of the Indian subcontinent. Proponents of calling the country Bharat argue that it represents India's indigenous culture and heritage more authentically.

On the other hand, the name "India" has been in use for centuries, with its origins attributed to the ancient Greeks. The Greeks called the land beyond the Indus river "Indoi," which eventually transformed into "India." Supporters of the term India argue that it better aligns with the country's international recognition and identity on a global scale. On the other hand proponents argue that adopting Bharat as the official name would symbolize a break from India's colonial past and reinforce the country's cultural heritage. They contend that the name change would elevate the sense of pride among Indians for their ancient roots and promote a deeper understanding of their historical legacy. However, changing the official name from India to Bharat would come with its own set of challenges. The name "India" has become ingrained in the global lexicon and carries significant weight in international relations. A sudden shift to Bharat might create confusion and disrupt established diplomatic ties, trade agreements, and global perceptions of the country.

The debate over Bharat or India is likely to continue for years to come. It is a testament to the multifaceted nature of India's identity and the ongoing dialogue necessary to navigate the complexities of a diverse and vibrant nation.

Shraddha Meena
B.Ed. (II year)

बी. एड. महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की एक झलक



श्री कृष्ण जन्माष्टमी



आत्मरक्षा कार्यशाला



शिक्षक दिवस



स्वास्थ्य जाँच शिविर

ARTIFICIAL GRAVITY

Gravity is a force that attracts a body towards the center of the earth or any other physical body having mass.

Artificial Gravity is the creation of an inertial force that mimics the effects of a gravitational force, usually by rotation.

Artificial gravity, or rotational gravity, is the appearance of a centrifugal force in a rotating frame of reference, as opposed to the force experienced in linear acceleration, which by the equivalence principle is indistinguishable from gravity.

In a more general sense, "artificial gravity" may also refer to the effect of linear acceleration, e.g., by means of a rocket engine. It is the creation of an inertial force in a spacecraft, in order to emulate the force of gravity. This concept is often seen in but is not limited to science-fiction shows like "Star Trek", and researchers are currently working on methods to create artificial gravity in space.

Dr. Kumud Jha
Asst. Prof. (Chemistry)

CHANDRAYAAN 3

Chandrayaan 3 is the third lunar mission of the Indian Space Research Organisation (ISRO). It was launched on 14 July 2023 from the Satish Dhawan space centre in Sriharikota, Andrapradesh. The mission's objective is to soft land a rover on the moon's south pole.

The rover named 'Pragyan' will be the first Indian rover to land on the moon. The mission will also conduct several scientific experiments including studying the moon's geology, water, resources and atmosphere.

Chandrayaan 3 is a significant milestone for India's space program. It will make India the fourth country to land a rover on the moon after the United States, the Soviet Union and China.

Chandrayaan 3 is a testament to India's growing technology and scientific capabilities. It symbolises India's ambition to become a space power.

Navraj Kanwar Rajawat
B. Ed. (II year)



नेत्रदान-महादान की शपथ लेती हुई छात्राएं



नेत्रदान जागरूकता हेतु नुवकड़ नाटक प्रदर्शन

स्वनिम (ध्वनि ग्राम) विज्ञान (Phoneme)

स्वनविज्ञान भाषा विज्ञान की वह शाखा है जिसके अंतर्गत मानव द्वारा बोली जाने वाली ध्वनियों का अध्ययन किया जाता है। यह बोली जाने वाली ध्वनियों के भौतिक गुण उनके स्वरित, शारीरिक उत्पादन, श्रवण, ग्रहण और तंत्रिका-शारीरिक बोध की प्रक्रियाओं से संबंधित है।

स्वनिम विज्ञान (ध्वनि) की जिस शाखा में किसी भाषा विशेष के स्वनियों (ध्वनियों) का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है उसे स्वनिम विज्ञान/ध्वनि विज्ञान कहते हैं। यह अंग्रेजी के Phonemics शब्द का हिन्दी पर्याय है। स्वनिम शब्द संस्कृत के स्वन धातु से बना है जिसका अर्थ है ध्वनि करना। स्वनिम विज्ञान आधुनिक पाश्चात्य भाषाविद् की देन है। स्वनिम उच्चारित भाषा का वह न्यूनतम रूप है जो दो ध्वनियों का अन्तर प्रकट करता है।

स्वनिम अपने वितरण में व्यतिरेकी (Contrastive) होते हैं। इसका आशय यह है कि जहाँ एक की उपस्थिति होगी वहाँ दूसरा नहीं आ सकता जैसे-कमल में 'म' और 'ल' के वितरण को 'ल' और 'म' से बदले तो वह 'कलम' होगा। इस प्रकार स्वनिम परिवर्तन से अर्थ परिवर्तन भी घटित होता है।

पायल, पूजा, पूनम, इन तीनों के 'प' के उच्चारण में थोड़ा अन्तर है। पूजा के साथ जो 'प' है वह पायल के साथ नहीं होगा क्योंकि उनके उच्चारण में जो अंतर है वह उनके साथ आए अन्य स्वनिम के कारण है। अगर पूजा वाला 'प' पूनम में आ भी जाए तो अर्थ भेद नहीं होगा। वितरण की ऐसी अवस्था जब ध्वनि, में अन्तर होने पर भी अर्थ परिवर्तन नहीं होता, मुक्त वितरण कहलाती है। स्वनिम भाषा विज्ञान में, एक शब्द को दूसरे से अलग करने वाली भाषा की सबसे छोटी इकाई है।

डॉ. रश्मि शर्मा
सहायक आचार्य (हिन्दी)

कला समेकित शिक्षा

मनुष्य ने आनंद की प्राप्ति और जीने के लिए जितने उपायों का विकास किया है उसमें भाषा का विशेष स्थान है। साहित्य मनुष्य को आनंद देता है परंतु उसकी अभिव्यक्ति का क्षेत्र सीमित होता है लेकिन विभिन्न प्रकार की कलाएं इस अभाव की पूर्ति करती हैं।

शिक्षा में कला का प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण पद्धति है। विशेष रूप से अमूर्त अवधारणाओं को स्पष्ट करने में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। साथ ही कला दृष्टि से संबंधित होने के कारण अधिगम के प्रत्येक सत्र को सजीव बनाती है। विचारों और भावनाओं के मूर्त रूप को बालक स्थाई रूप से मस्तिष्क में स्मरण रख सकता है। और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अधिक रोचक व प्रभावशाली बनाता है।

वर्तमान में शिक्षक गणित पढ़ाने के लिए भी नाटक और कला का प्रयोग कर रहे हैं। 2010 में मिसौरी पब्लिक स्कूल के द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि शिक्षा में कला के प्रयोग के कारण उच्च उपस्थिति के साथ परीक्षा परिणामों में भी वृद्धि हुई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षा में कला को 21 वीं शताब्दी की मूलभूत आवश्यकता बताया है तथा इस बात पर जोर दिया है कि भारतीय शिक्षा में कला को पुनः शामिल करना ही होगा।

कला और शिक्षा मानवीय समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कला शिक्षा छात्रों को न केवल सृजनात्मक बनाती है बल्कि उन्हें नवाचार की दिशा में भी प्रेरित करती है, विशेषकर शिक्षा के माध्यम से संकल्पना, संवेदनशीलता, अभिव्यक्ति और साहित्यिक कौशल विकसित किया जा सकता है।

किसी ने सही कहा है
कला शाश्वत, विद्यमान है हर एक में,
चित्र भी एक कला है, लिखना भी एक कला है।

श्रीमती पूनम व्यास
सहायक आचार्य (इतिहास)

लफ़्ज़ (उर्दू नज़्म)

राह जीने की कोई ऐसी निकाली जाए।
जग से तफरीक की हर रस्म उठाली जाए॥
एक दिवार 'अना' की जो गिराली जाए।
अपनी तहजीब को मिटाने से बचाली जाए॥
इक नज़र जग के भी हालात पेड़ा ली जाए।
मिलके रहने की कसम आज उठाली जाए॥

झांक कर देखें सभी अपने गेरबानों में।
कैसे गिरती हुई दिवार संभाली जाए॥
गर्द हर दिल पे तअस्सुब की चढ़ी है यारो।
गर्द हर दिल पे तअस्सुब की हटाली जाए॥
फासले खुद ही सिमट जाएंगे लेकिन "सागर"
सहन के बीच की दीवार गिराली जाए।

अन्दलीब जहां बी. एड (द्वितीय वर्ष)

गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान में प्रारंभ अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के छात्र-छात्राओं की रंगारंग प्रस्तुति की कुछ झलक



श्री कृष्ण जन्माष्टमी - 2023



प्रातःकाल शारीरिक व्यायाम



नन्हें-मुन्हों के सर्वांगीण विकास हेतु खेल दिवस का आयोजन



नन्हें-मुन्हों के लिए भ्रमण का आयोजन



मेधावी छात्रों को पुरस्कृत करते संस्थान मंत्री गुरदेव सिंह जी



छात्रों में 'श्रम' के माध्यम से गांधीवादी मूल्यों को विकसित करने का प्रयास



विद्यालय छात्रों द्वारा गांधी शैक्षिक शिविर के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी की झलक



गांधी शैक्षिक शिविर 2023 (29 सितम्बर से 02 अक्टूबर)



राजस्थान विश्वविद्यालय गांधी अध्ययन केन्द्र के निदेशक प्रो. राजेश कुमार शर्मा द्वारा माल्यार्पण



गांधीवादी विचारक श्री सवाई सिंह जी द्वारा महाविद्यालय प्रांगण में आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन



महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रो. बी.एम. शर्मा द्वारा महाविद्यालय भ्रमण



गांधी शैक्षिक शिविर के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र शर्मा हंस (जिला शिक्षा अधिकारी) द्वारा दीप प्रज्ज्वलन



गांधी शैक्षिक शिविर में आर्ट एवं क्राफ्ट कार्यशाला



अंतर्महाविद्यालयी एकल नृत्य प्रतियोगिता



सामूहिक भोज



अंतर्महाविद्यालयी एकल नृत्य प्रतियोगिता के समस्त प्रतिभागी निर्णायकों के साथ



गांधी थीम पर कक्षा सज्जा के तहत इंदिरा सदन की छात्राएँ

विश्व मानवाधिकार दिवस (10 दिसम्बर 2023)



राजस्थान मानवाधिकार आयोग के पूर्व अध्यक्ष एवं सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश श्री नगेन्द्र कुमार जैन द्वारा उद्बोधन



छात्राओ द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक



अन्तर्सदनीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

पाणिनि (संस्कृत श्लोक)

अष्टौ गुणा पुरुषं दीपयन्ति प्रजा सुशीलत्वदमौ श्रुतं च।
पराक्रमश्च बहुभाषिता च दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च॥

अर्थात् आठ गुण मनुष्य को सुशोभित करते हैं। बुद्धि, अच्छा चरित्र, आत्मसंयम, शास्त्रों का अध्ययन, वीरता, कम बोलना, क्षमता और कृतज्ञता के अनुसार दान।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

अर्थात् कोई भी काम कड़ी मेहनत के बिना पूरा नहीं किया जा सकता है। सिर्फ सोचने भर से कार्य नहीं होते हैं, उनके लिए प्रयत्न भी करना पड़ता है। कभी भी सोते हुए शेर के मुंह में हिरण खुद नहीं आ जाता उसे शिकार करना पड़ता है।

सोनिया बागड़ी
बी. एड. (प्रथम वर्ष)

तूफान में कश्ती

तूफानों में कश्ती कहाँ पार होती है
तूफानों की साथी मझधार होती है
मझधारों में फस कर रुकती नहीं कश्तियाँ
कश्तियों के पास हौसलों की तलवार होती है ।
तूफानों में कश्ती कहाँ पार
ए दिल कर ले यकीं इस बात पर तू
एक बार लौट गया हार कर तू
मिलने न पाएगी मंजिल उस पार की तुझे
क्योंकि, हारने वालों की क्या कोई दरकार होती है ?
तूफानों में कश्ती कहाँ पार
मिट जायेंगे फासले इस दौर के भी
मिल जायेंगे लोग उस ओर के भी
सब्र का हाथ छूटने ना पाये तुझसे भी
आज हारे हैं तो क्या, कल जीत जायेंगे भी
जीतने के लिए भी तो सब्र की दरकार होती है
तूफानों में कश्ती कहाँ पार

श्रीमती नीरा पारीक
सहायक आचार्य (विज्ञान)